RP-22-23

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIIII) 399

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is Indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIIII) 399 (A)

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

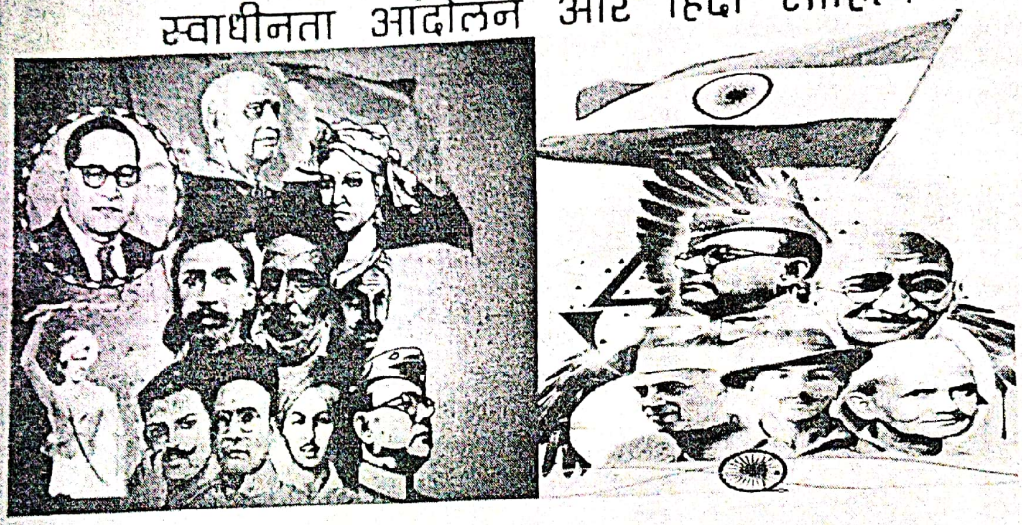

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar International Publication
Amravati. (M.S.) INDIA
For Details Visit To : www.aadharsocial.com

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Impact Factor - (SJIF) -8.632 ISSN - 2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2023

ISSUE No- (CCCXCVIIII) 399

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
Prof. Virag.S.Gawande
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Executive-Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

Editorial Board

Chief Editor -
Prof.Virag S.Gawande,
Director,
Aadhar Social Research &,
Development Training Institute, Amravati. [M.S.] INDIA

Executive-Editors -

- **Dr.Dinesh W.Nichit** - Principal, Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.
- **Dr.Sanjay J. Kothari** - Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

Advisory Board –

Dr. Meena Jadhav
Smt. Roshni Kamble
Mr. Mahesh Kamble

- **Dr. Dhnyaneshwar Yawale** - Principal, Sarswati Kala Mahavidyalaya , Dahihanda, Tq-Akola.
- **Prof.Dr. Shabab Rizvi** ,Pillai's College of Arts, Comm. & Sci., New Panvel, Navi Mumbai
- **Dr. Udaysinh R. Manepatil** ,Smt. A. R. Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji,
- **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil** , Principal, C.S. Shindure College Hupri, Dist Kolhapur
- **Dr.Usha Sinha** , Principal ,G.D.M. Mahavidyalay,Patna Magadh University.Bodhgay Bihar

Review Committee -

- **Dr. D. R. Panzade,** Assistant Pro. Yeshwantrao Chavan College, Sillod. Dist. Aurangabad (MS)
- **Dr.Suhas R.Patil** ,Principal ,Government College Of Education, Bhandara, Maharashtra
- Dr. Kundan Ajabrao Alone ,Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Tal-Daryapur, Dist-Amravati.
- **DR. Gajanan P. Wader** Principal , Pillai College of Arts, Commerce & Science, Panvel
- **Dr. Bhagyashree A. Deshpande,** Professor Dr. P. D. College of Law, Amravati]
- **Dr. Sandip B. Kale,** Head, Dept. of Pol. Sci., Yeshwant Mahavidyalaya, Seloo, Dist. Wardha.
- **Dr. Hrushikesh Dalai** , Asstt. Professor K.K. Sanskrit University, Ramtek

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responicible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- Executive Editor

Published by -
Prof.Virag Gawande
Aadhar Publication ,Aadhar Social Research & Development Training Institute, New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College,Amravati
(M.S.) India Pin 444604 Email : aadharpublication@gmail.com
Website : www.aadharsocial.com Mobile : 9595560278 /
Website – www.aadharsocial.com Email – aadharsocial@gmail.com.

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist.

20	रेखा जैन कृत 'स्वाधीनता संग्राम' में चित्रित आजादी का संघर्षमय इतिहास — प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र	75
21	प्रेमचन्द के उपन्यास और स्वाधिनता आंदोलन — प्रा. डॉ. देशपांडे वैशाली	78
22	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान — शेख.बेनज़ीर	81
23	स्वातंत्र्योत्तर आदिवासी उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना — प्रा.डॉ. महावीर रामजी हाके	84
24	स्वाधीनता आंदोलन मे हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका — प्रा.डॉ.सादिकअली हबीबसाब शेख	88
25	स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय भाव संवेदना — डॉ. सुभाष राठोड	91
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी राष्ट्रभाषा — प्रा, डॉ गनी गफूर साहेब शेख	96
27	स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी कवियों का योगदान — डॉ.बालाजी भुरे	99
28	हिन्दी-काव्य में राष्ट्रीयता — डॉ.मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	105
29	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा — डा.माधव पाटील	109
30	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य — प्रा.डॉ.जाधव के.के.	113
31	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी प्रचार संस्था — डॉ. गिरधर लाल शर्मा	119
32	रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना — प्रा. डॉ.पठाण खातून बेगम अकबर खाँ	123
33	आजादी का प्रेरक गीत "जाग तुझको दूर जाना" — प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव	128
34	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य — प्रा.विजय सिंह ठाकुर	131
35	'भारत भारती' और 'भैरवी' में स्वाधीनता आंदोलन — डॉ. संजय नाईनवाड	133
36	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना — डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की	139
37	हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना — डॉ. रेविता बलभीम कावळे	143
38	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता — डॉ. रत्नमाला धारबा धुळे	147
39	स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचंद की कहानियाँ। — प्रा. आनंद लोखंडे	151
40	स्वाधीनता संग्राम के साहित्यिक नायक : प्रेमचंद — डॉ.सुजितसिंह परिहार	153
41	भीष्म साहनी कृत 'तमस' उपन्यास मे राष्ट्रीय भावना — प्रा.सुर्यकांत चोरघडे	157
42	स्वाधीनता आंदोलन और झाँसी की राणी लक्ष्मीबाई — डॉ.पजई शंकर रामभाऊ	159
43	रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता — डॉ.शिवाजी वडचकर	161
44	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा — प्रा.डॉ.विजय गणेशराव वाघ	165

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU
PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist Parbhani
Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की
विभाग प्रमुख, हिंदी विभाग, नूतन महाविद्यालय,सेलू जिल्हा परभणी.
मो.नं.9834213699Email:patkiac@gmail.com

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के समकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय काव्य की परंपरा को आगे बढ़ाया। समाज को जागृत करने हेतु इन कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्रीयता की भावना को काव्य का विषय बनाकर राष्ट्रीय चेतना को चरम पर पहुँचाया| इसी राष्ट्रीय चेतना को अपने काव्य का विषय बनाकर हिंदी साहित्य में सर्वाधिक सबल हस्ताक्षर के रूप में दिनकर उभर कर आते है।

गजानन माधव मुक्तिबोध ने लिखा है कि, 'साहित्य विवेक मूलतः जीवन विवेक है। कहने का तात्पर्य यह कि जीवन और जगत् के बारे में किसी कवि या कलाकार कि जो दृष्टि होती है वही उसकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। ध्यान देने की बात यह है की जीवनदृष्टि के निर्माण में परम्परा, इतिहास-बोध, संस्कृति से साथ-साथ समय का सामाजिक, राजनैतिक परिवेश बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है। इस क्रम में प्राय: विवेकशील कवि परम्परा के प्रासंगिक तत्वों का संग्रह, अप्रासंगिक तत्वों का त्याग करते हुए अपनी रचनाशीलता के माध्यम से साहित्येतिहास की धारा को आगे बढाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने लगभग पाँचसौ वर्ष पहले यह समझाया था कि बिना ठीक से जाने समझे न तो परम्परा को स्वीकार किया जाना चाहिए और न ही उसका निषेध –'संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।'

हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त के साथ-साथ रामधारी सिंह दिनकर को भी राष्ट्रकवि पुकारा जाता है। जब कि सच्चाई यह है कि भारतीय भाषाओं में लिखनेवाले वे सारे राष्ट्रकवि कहलाने के अधिकारी है जो भारत की सामाजिक संरचना, इतिहास एवम् भूगोल से अच्छी तरह परिचित है और जिसका प्रमाण उनकी कविताओं में मौजूद है।

कवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविता की एक समृध्द परम्परा मिली थी, जिसका निर्माण मैथिलीशरणगुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे अनेकानेक रचनाकारों ने किया था।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास का सामान्य ज्ञान रखने वाले लोग भी यह अच्छी तरह जानते हैं कि कायदे से भारत में स्वाधीनता संग्राम सन १८५७ से आरम्भ हो गया था, जिसे हम नवजागरण काल कहते हैं। उस दौर के लिखे साहित्य पर यदि एक नजर डाले तो वही हमें जहाँ एक ओर साम्राज्यवाद विरोधी चेतना दिखायी पडती है, वही दूसरी ओर सामन्तवाद विरोधी प्रकृतियों भी मिलती हैं। दिनकर की कविताओं में ये दोनों ही तत्व बड़े ही मुखर रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। स्वाधीनता के पहले अंग्रेजी राज में एक महत्वपूर्ण अधिकारी पद पर आसीन होने के बावजूद कवि के रूप में दिनकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद को भारत की जमीन से उखाड़ फेंकने का आवाहन करते हैं। 'हुँकारे' की कविताएँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, दिनकर ने लिखा-

'फेंकता हूँ लो तोड़-मरोड
अरी निष्ठुरे विन के तार,
उठा चाँदी का उज्जवल शंख
फूंकता हूँ भैरव हुँकार |
नहीं जीते जी सकता देख
विश्व में झुका तुम्हारा भाल;
वेदना मधु का करके पान
आज उगलूंगा गरल कराल |

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

ध्यान देने की बात यह है कि दिनकर की कविताओं में तीव्रतम रागात्मकता के तत्व आरम्भ से मौजूद थे 'रेणुका' के कवि के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। इसलिए 'हुँकार' की कविताएँ काव्य लेखन का एक नया मोड़ लेकर सामने आयीं। आम तौर पर क्रांतिकारी या विद्रोही कहे जाने कवि जिन्दगी पर एक खास तरह की

कविताएं लिखते जाते है। जैसे बंगला में काजी नजरुल इस्लाम केवल अपनी क्रांतिकारी कविताओं की वजह से जाने जाते है, जिनमें सबसे पवित्र उनकी कविता का शीर्षक है 'अग्निवीणा', जिसका हिन्दी में अनुवाद दिनकर के करीबी बुजुर्ग मित्र एवम् वरिष्ठ साहित्यकार मित्र रामवृक्ष बेनीपुरी ने किया बेनीपुरी को दिनकर अपनी आत्मा का शिल्पी कहा करते थे। उन्होंने लिखा भी है-

'है कुमुद फूलते जहाँ
धन्य वह विधु मंडल
दिन के पवाह से बचे
किन्तु किस भाँति कमल
विधु पर आ जाउँ
मिले वहाँ आधार एक
आत्मा के शिल्पी
बढ़ा किरण का तार एक।'

परिणिती रामवृक्ष बेनीपुरी से दिनकर का यह आत्यन्तिक एवम् वैचारिक मिलन के रूप में परिणित हो गया जिसके परिणाम स्वरूप कवि दिनकर समाजवादी विचारधारा की ओर आकृष्ट हुए। जयप्रकाश नारायण के वे अत्यन्त करीबी मित्रों में रहें और उन्होंने न केवल समाजवाद को भारत के लिए गाँधीवाद का पुरक माना, बल्कि भारतीय गाँवों की दुर्दशा को देखकर वे मार्क्सवाद की ओर भी एक सीमा तक झुकने लगे थे। अपनी एक कविता में उन्होंने अपनी रचनाशीलता को 'लेनिन के दिल कि चिनगारी' कहकर पुकारा है। दिनकर कहते हैं कि जिस समाज में बड़ी संख्या में लोग भूखे मर रहे हो उसमें यदि कोई आडम्बर है, तो वह आग लगा देने योग्य हैं-

'क्रांतीधातत्रि कविते! जागे उठ,
आडम्बर में आग लगा दे,
पतन, पाप पाखण्ड जले,
जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे !
उठ भूषण की भाव रंगीनी !
लेनिन के दिल की चिनगारी !
युग मर्दित यौवन कि ज्वाला !
जाग- जाग, री क्रांति-कुमारी !

कवि दिनकर के लिए क्रांति 'विपथगा' है, जिसके परिणाम को लेकर वे जरा भी चिन्तित प्रतीत नहीं होते। कई बार तो ऐसा लगता है कि दिनकर की क्रांतिकारिता में अराजकता के तत्व भी है। गौरतलब है कि अराजकता दिनकर के यहाँ नकारात्मक नहीं, बल्कि रचनात्मक रूप में मौजूद है। अपनी एक कविता में उन्होंने लिखा है कि वे स्वतंत्रता को इसलिए पसन्द नहीं करते, क्योंकि उससे सुखशांति मिल सकती है, बल्कि इसलिए कि उसे प्राप्त करने के लिए क्रांति करनी पड़ती है-

'स्वातंत्र्य पूजता में न तुझे
इसलिए कि तू सुख शांति रूप
में उसे पूजता जो चलता
तेरे आगे नित क्रांति रूप।'

सच तो यह है कि इस तरह की उग्रराष्ट्रवादी कविताएँ जो दिनकर ने बड़ी संख्या में लिखी। इसलिए हिन्दी पाठक समुदाय के बीच उनकी एक खास पहचान भी बन गयी। इन कविताओं में कवित्व के साथ वक्तृत्व का अद्भुत मेल है। इसलिए कविसम्मेलनों में बार-बार दिनकर जी से लोग ऐसी ही कविताएँ सुनाने का आग्रह किया करते थे और लोग उन्हें सराहते भी थे। औरतो और गाँधीजी पर रचित उनकी कविता ' अंगार' शब्द से शुरू होती है। यह दूसरी बात है कि कविता के अन्ततक आते-आते वे गांधी के व्यक्तित्व के समक्ष इतने विनयी हो जाते हैं, मानो अंगार लजाने लग गया हो-

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
Dist Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

'अंगार विभूषण यह उनका विद्युत पीकर
जो आते है,
ऊँघाती शिखाओं की लौं मे चेतना
नई भर जाते है|
अंगार हार उनका,
जिनकी सुन हाक
समय रुक जाता है
आदेश जिधर का देते है,
इतिहास उधर झुक जाता है|
अंगार हार उनका
कि मृत्यू भी जिनकी आग उगलती है|'

दिनकर के काव्य में साम्राज्यवाद का विरोध दर्शाया दिखायी देता है | कई बार राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के नेताओं को अनिश्चय भरी मनोदशा को लेकर आक्रोश एवम् दुःख दोनों ही मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। अनिश्चय की मनोदशा को व्यक्त करने वाली दिनकर जी की प्रसिद्ध कविता का शीर्षक है 'ओ व्दिधा ग्रस्त शादूल बोल' जिसमें आक्रोश अपने चरम पर है तथा मुक्ति संग्राम के नेताओं की अनिश्चय भरी मानसिकता को लेकर गहरे दुःख को अभिव्यक्ति यदि देखनी हो, तो 'असमय आहवान' शीर्षक कविता पढनी चाहिए, जिसमें दिनकर लिखते हैं,

सुलगती नहीं यज्ञ की आग,
दिशा धूमिल, यजमान अधीर;
पुरोधा कवि कोई है यहाँ
देश को दे ज्वाला के तीर
धुएँ में किसी वन्हि का
आज निमंत्रण लाता है कोई|

इस कविता में धुएँ का जिक्र राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के क्रम में अनिश्चय भरी दशा को व्यक्त करने के लिए आया है, लेकिन दिनकर आशावादी कवि है इसलिए उन्हें वन्हि का निमंत्रण अर्थात् क्रांति या परिवर्तन के आगमन की सम्भावना दिखायी पड़ती है।

दिनकर को राष्ट्रीयवादी कविताओं में साम्राज्यवाद विरोध के साथ-साथ सामन्तवाद विरोध को चेतना भी अन्तर्निहित है। भारतीय संदर्भ में सामंती पुरोहिती गठजोड के चलते आम जनता का भरपूर क्रूर दमन कवि दिनकर ने अपनी नंगी खुली आँखों से देखा था। प्रेमचन्द के उपन्यासों में जिस प्रकार चित्रित किया गया है कि कैसे जमीनदार, पुरोहित, अंग्रेजी राज्य के कर्मचारी, थाना-पुलिस- पटवारी, सब मिलकर किसानों का खून चूस रहे थे उसी प्रकार दिनकर कविताओं में भी इसी शोषण से पीड़ित जनता के दर्द को मामिकता के साथ उजागर किया गया है-

'जेठ हो कि हो पूस, हमारे
कृषकों को आराम नही है।
वसन कहाँ? सुखी रोटी भी
मिलती दोनों शाम नही है|'

इस संदर्भ में दिनकर जी की सर्वाधिक प्रसिध्द कविता वह है, जिसमें उन्होंने ग्रामीण परिवेश में वर्णाश्रमवादी एवम् सामन्ती मूल्यों के भार से तड़पती हुई बहुजन समाज की वेदना को व्यक्त किया है।

शस्त्रों के भय से जब निरस्त्र,
आँसू भी नहीं बहाते हैं।
पी अपमानों की गरल हाेंट,
शासित जब वोट चबाते है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIII) 398-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते है |
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर
जाड़ो की रात बिताते है।
युवती के लज्जा वसन बेच
जब ब्याज चुकाएं जाते है,
मालिक जब तेल-फुलेलों पर
पानी-सा द्रव्य बहाते है|
पापी महलों का अहंकार
देता तब मुझको आमंत्रण।

कुल मिलाकर यह कहना समीचीन होगा कि दिनकर की कविता में राष्ट्रीयता अपनी पूरी व्यापकता और गहराई के साथ मौजूद है। दिनकर जी की राष्ट्रीयता पर उनके युग का प्रभाव पडा है। दिनकर ने अपने गद्य में राष्ट्रीय भावना के संबंध में स्वयं लिखा है-

"संस्कारों से मै कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया था, किंतु मेरा मन भी चाहता था कि गर्जना तर्जन से दूर रहूं और केवल ऐसी ही कविताएँ लिखुँ जिनमें कोमलता और कल्पना का उभार हो..... और सुयश तो मुझे 'हुँकार' से ही मिला, किंतु आत्मा अब भी 'रसवंती' मे बसती है| राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के नही आती| उसने बाहर से आकर मुझे आक्रांत किया है|

आधुनिक हिंदी साहित्य मे दिनकर एक ऐसे रचनाकार है जिनके काव्य मे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा दर्शनिक क्षेत्रो के विभिन्न समस्याओं पर अत्यंत सूक्ष्म विवेचन हुआ है| दिनकर के काव्य मे व्याप्त राष्ट्रीयता की सरिता बडी ही प्रचड प्रवाहिनी रही है| उनका काव्य राष्ट्रीयता का अजस्त्र स्त्रोत है | क्रांती की दाहक ज्वाला है| विद्रोह, विनाश और महाविध्वंस का प्रबल आवाहन है| उनके काव्य मे परंपरा, राष्ट्रीयता, आंतरराष्ट्रीयता, मानवता, भावनाशीलता, वैचारिकता का अद्‌भुत समन्वय है | दिनकर जी की राष्ट्रीयता पर उनके युग का प्रभाव पडा है|

संदर्भ-

1) दिनकर एक शताब्दी, डॉ. स्वयंवती शर्मा - डॉ. दिनेश कुमार
2) राष्ट्रकवि दिनकर एवं उनकी काव्य कला - डॉ. शेखर चंद्र जैन
3) दिनकर का वीर काव्य - धर्मपाल सिंह आर्य.
4) दिनकर व्यक्तित्व और रचना के नये आयाम - डॉ. गोपाल राय सत्यकाम
5) दिनकर कि काव्यगाथा - डॉ. यतींद्र तिवारी
6) दिनभ्रमित 'राष्ट्रकवि' – प्रो. कोमेश्वर शर्मा
7) राष्ट्रकवि दिनकर और उनकी साहित्य साधना – सं. प्रतापचंद जैसवाल

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani